

न्यायालय सिविल जज (सी.डि.), देहरादून।

मूलवाद संख्या 110/2025

(सी.आई.एस. फाइलिंग नम्बर /2025)

गुरु राम राय चनाम अमन रोडिया

वाद प्रस्तुत करने का दिनांक	: 02.04.2025
वाद का प्रकार	: निषेधाज्ञा
वाद का मूल्यांकन	: 5,00,000/- रुपये
वादी अधिवक्ता का नाम	: श्री एस. पी. सिंह
प्रतिवादी अधिवक्ता का नाम	:

दिनांक 02.04.2025

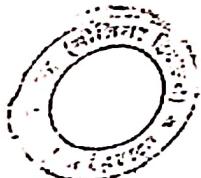
आज यह मूलवाद वाद पत्र की प्रति के साथ य मुंरारिग आख्या पर सुना गया। वादी के हारा बतौर विरासत सम्पत्ति प्राप्त होने का कथन किया है, जिसे मूलवाद वाद के रूप में दर्ज रजिस्टर किया जाता है तथा सी.आई.एस. में एच्ची हो। कार्यालय की आख्यानुसार वाद गे केविएट अन्तर्गत धारा 148 सी.पी.री. नहीं है।

प्रतिवादीगण को समन वास्ते प्रतिवाद पत्र दिनांक 21.04.2025 एवं वाद विन्दु हेतु दिनांक 21.05.2025 के लिए जारी हो। वादी पैरवी से समन अन्दर स्वताह में करे। रामन नजारत के आदेशिका वाहक से तामील कराया जाए।

(राहुल कुमार श्रीवारताव)
सिविल जज (सी.डि.),
देहरादून

पुनरुत्थ

प्रार्थना पत्र 6सी2 मय शपथपत्र 7सी2 वर्दी की ओर से अस्थाई निषेधाज्ञा हेतु प्रस्तुत कर आदेश हुआ कि-



दिनांक 02.04.2025

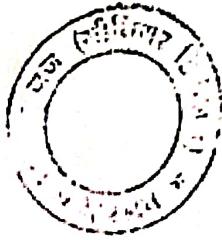
वादी द्वारा 6ग्र प्रार्थना पत्र पर बल दिया गया और एकपक्षीय रूप से सुने जाने की प्रार्थना यही गई तथा गामला अजेंट दत्ताया गया। वादी के विद्वान अधिवक्ता श्री एस. पी. सिंह को प्रार्थना पत्र संख्या 6ग्र2 मय शपथपत्र पत्र 7सी2 पर सुना गया।

2. वादी द्वारा प्रार्थना पत्र संख्या 6सी2 मय शपथपत्र 7ग्र2 यादत अस्थायी निषेधाज्ञा हेतु प्रस्तुत किया गया है।

3. सुना तथा पत्रावली का अवलोकन किया।

4. वादी द्वारा वाद प्रतिवादी के विलक्षण अस्थायी निषेधाज्ञा हेतु यह कहते हुये प्रस्तुत किया गया है कि वादी संस्था सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट के अन्तर्गत पंजीकृत है। वादी संस्था इस वाद पत्र के अंत में वर्णित सम्पत्ति नंख्या 01676 में खसरा संख्या 156(ख) रकाव 11.4370 है। भौजा देहराखात मातावाला याप देहरादून के एकमात्र मालिक व स्वामी है। वादग्रस्त सम्पत्ति महन्त देवेन्द्र दास जी चेला श्री नहन्त इन्द्रेश चरण दास जी सज्जानशीन दरवार श्री गुरु राम राय झंडा मोहल्ला देहरादून के नाम माल खाते में दर्ज है। पूर्व में नहन्त इन्द्रेश चरण दास जी द्वारा 1999 में पवन शर्मा को वादग्रस्त सम्पत्ति पर स्थित श्री गुरु राम राय अखाड़े में कुश्ती कोच के रूप में नियुक्त किया था। पवन शर्मा ने दीमारी के कारण अखाड़े का शांतिपूर्वक अध्यासन वादी को सौंप दिया। दिनांक 16.03.2025 से प्रतिवादी अमन स्वेडिया एवं अन्य असामाजिक तत्व त्वर्य पहलवान बनकर कब्जे की नियत से वादग्रहत सम्पत्ति में दिना अनुमति प्रदेश कर रहे हैं। पेड़ों को काटाने का निया प्रचार कर रहे हैं और लोगों की भवनाओं को भड़का रहे हैं तथा सोशल मीडिया पर अनागल प्रचार कर रहे हैं। वादी के कर्नधारियों ने प्रतिवादीगण को रोका तो उन्होंने सम्पत्ति के भीतर एवं बाहर कई बार धरना प्रदर्शन किया। अतः प्रतिवादीगण उनके नौकर, एजेंट हित प्रतिनिधि आदि को अस्थाई निषेधाज्ञा द्वारा निषेधित किया जाए कि वह वादग्रस्त सम्पत्ति के भीतर व मुख्य द्वारा व घोन्डीवॉल से जवरदस्ती दखल अंदाजी न कर और न ही उसका कारण बनें।

5. वादी द्वारा अपने कथनों के समर्थन शपथपत्र 7सी2. सोसायटी के नवीनीकरण की प्रति, खाता विवरण की प्रति, कुश्ती रांघ के प्रपत्र की प्रति, जिलाधिकारी को प्रेषित पत्र की प्रति, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक को प्रेषित पत्र की प्रति, प्रथम सूचना रिपोर्ट की प्रति, रूची के गाध्यम से अधोरिटी पत्र की प्रति, मैनेजिंग कमेटी की प्रति, फोटोग्राफ प्रस्तुत किए गए। प्रस्तुत दस्तावेजों से प्रथम दृष्टया मामला



उपनियम 1 के तहत अर्जेन्ट नामला बताया है तथा यह कथन किया गया है कि उनके हारा वादग्रस्त सम्पत्ति में प्रतिवादीगण हारा कब्जा करने का प्रदाता किया जा रहा है। भड़काने का एवं सोशल मीडिया पर गलत प्रचार किया जा रहा है। प्रतिवादीगण भीतर धरणा प्रदर्शन किया जा रहा है, जिससे अंडे जी के मेले में आने वाली संगतों को भी मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक क्षति उठानी पड़ रही है।

7. वादी के विद्वान् अधिवक्ता के तर्कों तथा प्रस्तुत शपथपत्र के परिवर्तन से वर्तमान वाद के तथ्य एवं परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए व प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर प्रतिवादीगण को अग्रिम नियत तिथि तक वाद पत्र के अंत में दर्शाई गई सम्पत्ति में 500 मीटर की परिधि में धरणा-प्रदर्शन करने, आवागमन, लाउडस्पोकर का इस्तेमान तथा दखलअंदाजी करने से निषेधित किए जाने के लिए कथन किया गया है अन्यथा वादी को अपूर्णीय क्षति होगी। मामल अर्जेन्ट होना प्रतीत होता है।

8. तदनुसार प्रतिवादीगण को अंतरिम निषेधाज्ञा के माव्यम से आदेशित किया जाता है कि वह अग्रिम नियत तिथि तक वाद पत्र के अंत में दर्शाई गई सम्पत्ति में 250 मीटर की परिधि में धरणा प्रदर्शन न करे न करवाए तथा कोई व्यवधान उत्पन्न न करे न करवाए।

9. वादी आदेश 39 नियम 3 सिविल प्रक्रिया संहिता के परन्तुक के खण्ड क' व ख' का अनुपालन करे जिसके अनुसार यह आदेशित किया जाता है कि प्रार्थना पत्र 6ग एवं उसके साथ प्रस्तुत किए गए शपथपत्र ग्रन्थ रांगनक तथा वाद पत्र की प्रति एवं अन्य दस्तावेज, जिन पर आवेदक निर्भर करता है उसे पंजीकृत डाक मय ए.डी. से भेजे।

10. वादी आवेदन 6सी के निस्तारण में तथा तामील कराने में यदि विलम्ब कारित करता है या अनावश्यक रूप से स्थगन पेश करता है तो एकपक्षीय अस्थाई निषेधाज्ञा का आदेश अन्तर्गत आदेश 39 नियम 4 उपनियम (1) के परन्तु (जो उत्तर प्रदेश/उत्तराखण्ड सिविल लॉ रिफोर्म अधिनियम, 1976) के तहत प्रभाव मुक्त कर दिया जाएगा।

11. पत्रावली दिनांक 2/1/1982 को प्रार्थना पत्र 6ग2 पर आपत्ति/निस्तारण हेतु पेश हो। वादी अविलम्ब पैरवी करें। प्रतिवादी को नियमानुसार नोटिस जारी हो। आदेश एन.जे.डी.जी. पोर्टल पर अपलोड हो।

राहुल कुमार श्रीवास्तव
सिविल जज (सी.डि.)

देहरादून
दिनांक 3/1/1982
प्राप्ति नं. 3 प्री.जी. रम. के
द्वारा द्या गया।